क्षरपुरुष

मोह अग्यान भरमना, करम काल और सुंन ।
ए नाम सारे नींद के, निराकार निर्गुण ।।क. हि. २४/१९
फिरे जहां थें नारायन, नाम धराया निगम ।
सुन्य पार ना ले सके, हटके कह्या अगम ।।सनंध ५/४०

ए कहे दोऊ भिंन भिंन, खेल देखन के दोऊ कारन ।
उपज्यो मोह सुरत संचरी, खेल हुआ माया विस्तरी ।।
इत अक्षर को विलस्यो मन, पांच तत्व चौदे भवन ।
यामें महाविष्णु मन मन थें त्रैगुन, ताथें थिर चर सब उतपन ।।
प्र. हि. ३७/२३,२४

तस्मान्नारायणो जज्ञे स एव प्रणवाभिधः ।
हिरण्यगर्भमपि तं प्रवदन्ति मनीषिणः ।।माहेश्वर तन्त्रः२०/२७
तस्मिन्विमोहजल धावशेत पुरुषो महान ।
तस्मादेव समुत्तस्थौ भूत्वा नारायणः स्वयम् ।।
पञ्चावयव संयुक्तः स एवं प्रणवाभिधः ।
पञ्चावयव संस्थाना ब्रह्माद्याः पञ्चदेवताः ।।
पुराण संहिताः२४/२८,२९

यह विराट पट का नकशा भूगोल की तरह तैयार किया गया है, जिसमें क्षर, अक्षर और अक्षरातीत तीनों ब्रह्मांडों का वर्णन सुक्ष्म रुपसे रखने की कोशिश की गई है। यह गुह्य आध्यात्म ज्ञान शास्त्रों में सुक्ष्म रुपसे निहित है, लेकिन स्पष्ट रुपसे नहीं है। परब्रह्म परमात्मा अक्षरातीत को अगम, निगम कहके छोड दिया गया है। मृत्युलोक एवं अनेक लोकोंवाले अनेक ब्रह्मांडों की उत्पत्ति एवं लय करने वाले शक्तिमान पूर्णब्रह्म परमात्मा अनंत शक्तियों का सहयोग है। वे शक्तियाँ कौन सी है, उनकी शक्ति क्या है और उनका स्थान कहां हैं उसका वर्णन दर्शाया गया है। इस गुह्य ज्ञान को परब्रह्म परमात्माने स्वयं अपने श्री मुखसे बताया, जो श्री कुलजम स्वरुप में प्रगट किया है। जो यहाँ नकशे के रुप में उतारा गया है। इस को पूर्णरुप से समझने के लिए **विराट पट दर्शन ग्रंथ** का अध्ययन अति आवश्यक है।

उपासनी निरगुन या निरंजन, किन उलंघ्यो न जाय विष्णु को कारन ।
या सास्त्र या साधू जन, द्वैत सबे समानी सुंन ।।
प्र. हि. ३४/१०

गीता ९/२५ में कहा गया है की जिस लोक की उपासना करोगे उस लोक में स्थान पाओगे। जीवन के अंतिम क्षणोंमें जिसके नाम की भक्ति करोगे, उस को पाओगे। उत्तम पुरुष परब्रह्म के चरणों में जाने के लीय क्षर-अक्षर से परे अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्मा की उपासना करनी चाहिये।

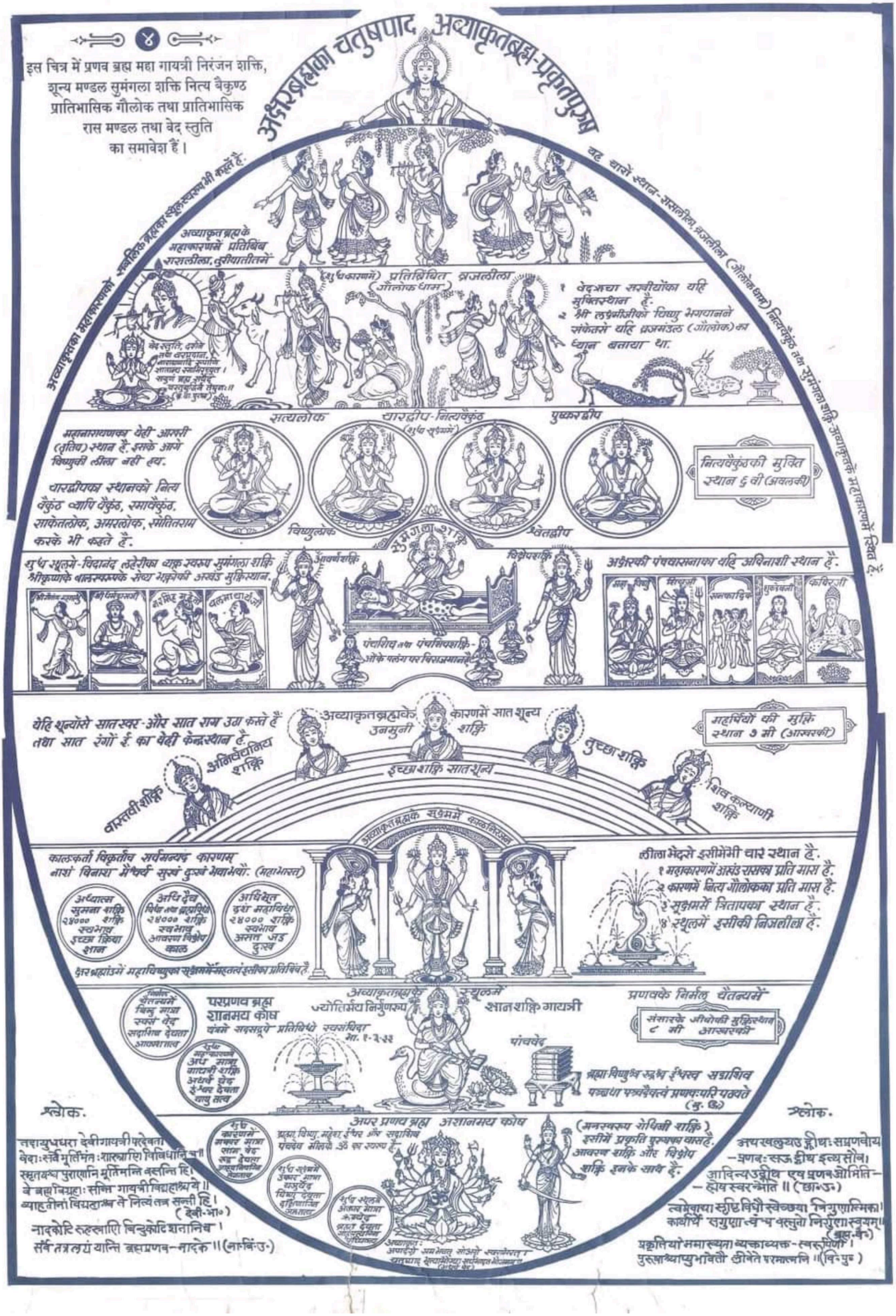

Shri Prannath Ji Pustkalay

इस चित्र में चिदानन्द लहेरी अखण्ड गौलोक धाम, अखण्ड महारास तथा त्रिपाद्विभूति स्वरुप सबलिक ब्रह्म तथा केवल ब्रह्म ता समावेश है।

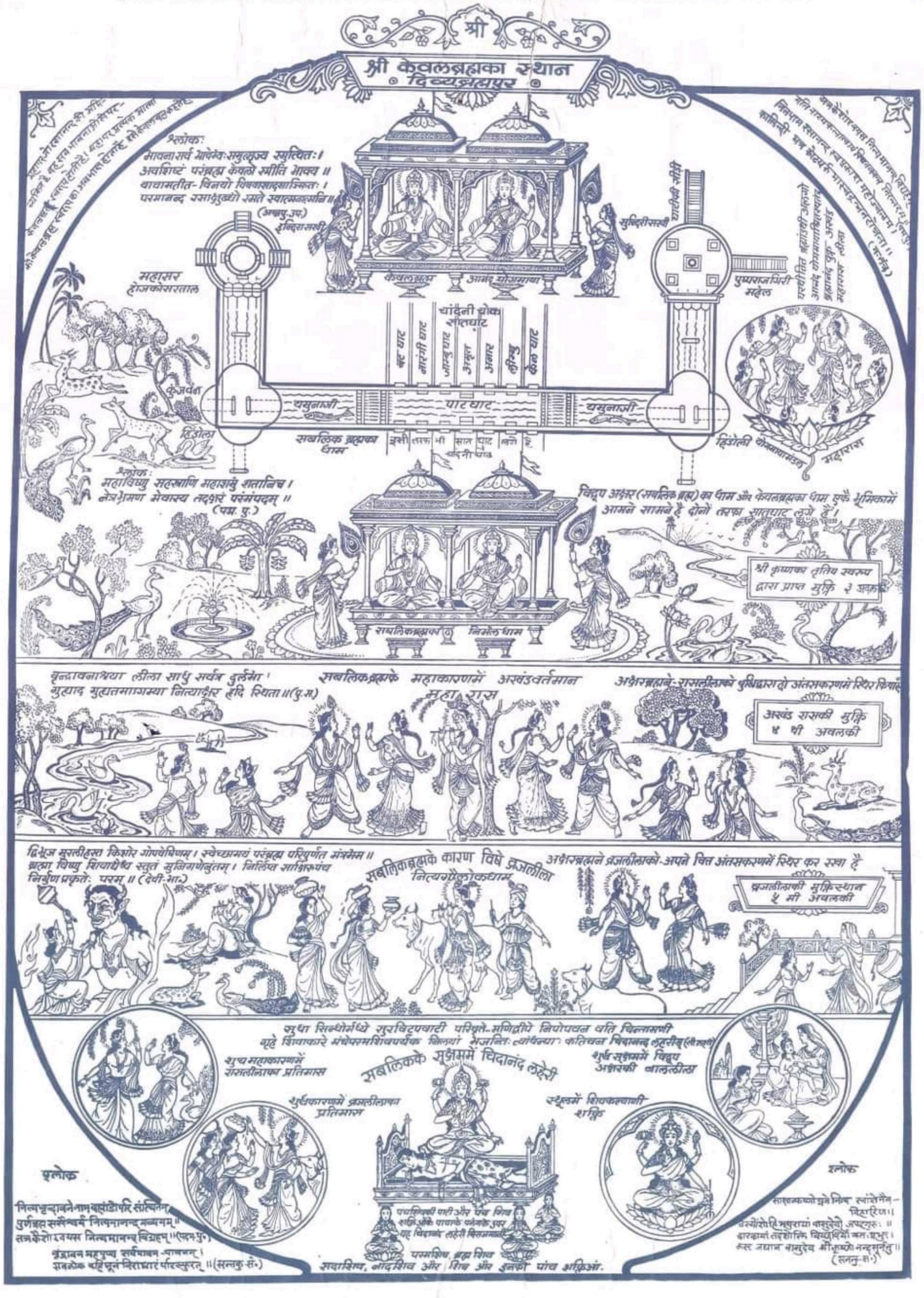

Shri Prannath Ji Pustkalay

सत्स्वरुप

इस चित्र में कूटस्थ अक्षर ब्रह्म का सत्स्वरुप तथा उनका तुरीयातीत, निर्मल स्थान में प्रथम दर्जे का अखण्ड मुक्ति स्थान है। इससे परे अक्षरधाम तथा अक्षरातीत का परमधाम है।

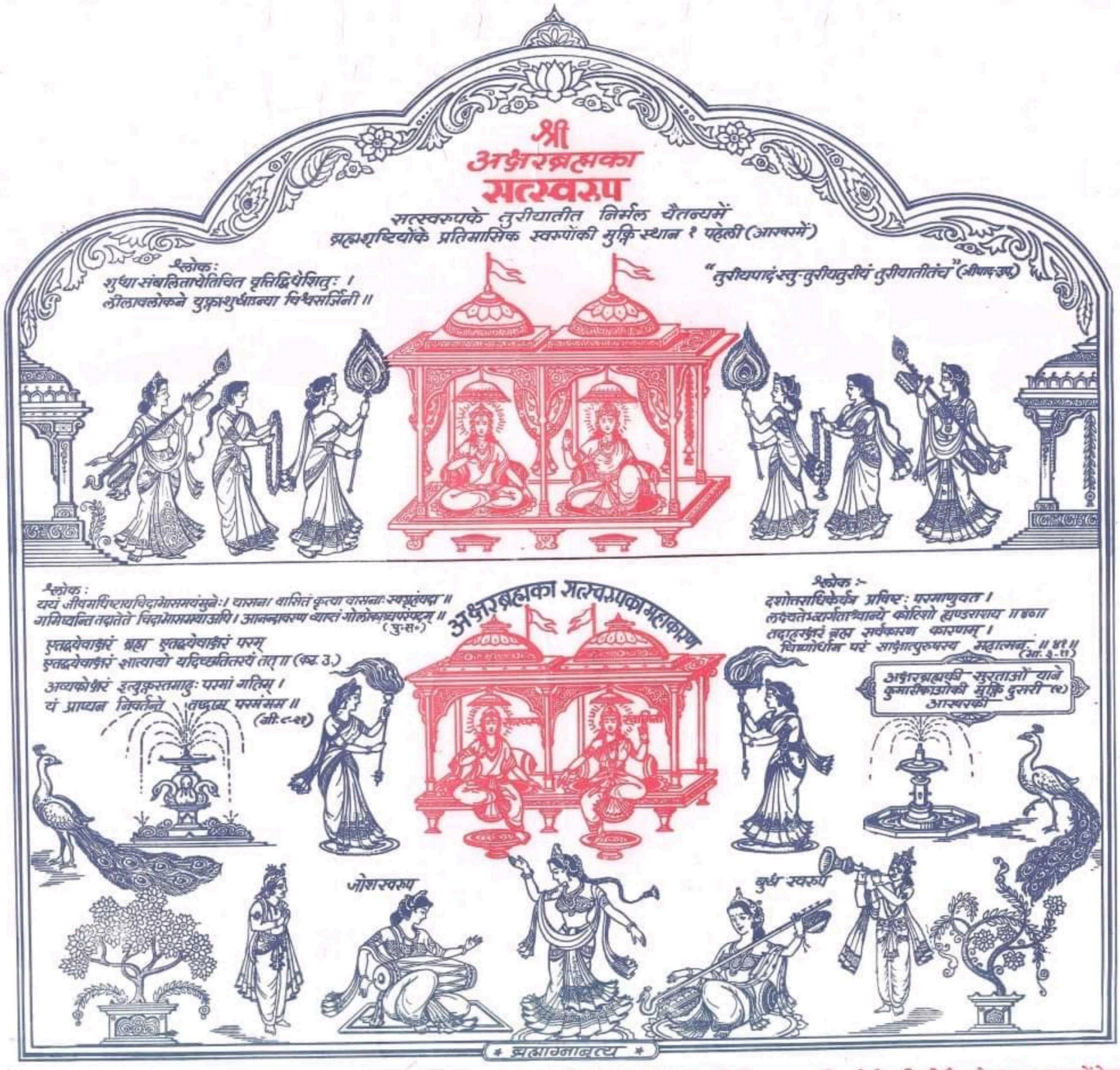

सत्स्वरुप जो अक्षरब्रह्म के मन स्वरुप कहे जाते हैं। वह दो वृत्ति संयुक्त हैं, एक को विलास की वृत्ति कहते हैं और दूसरे को खेल की वृत्ति माना जाता है। जो खेल की वृत्ति है उसके द्वारा अव्याकृत में चेतन का आभास पड़ता है, जिसमें अनेकों ब्रह्माण्डों की रचना होती रहती है, अतएव उसे संबलिता कहते हैं। दूसरी विलास की वृत्ति है उसे शुध्दावृत्ति कहते हैं, उसी में माया का भाव उदय होने नहीं पाता, अतः सदा सर्वदा शुध्दा के द्वारा ब्रह्मानन्द के रस का आस्वादन होता है। वह सत्स्वरुप का स्थान है।

जिन जिन जीवों को अधिष्ठान बनाकर ब्रह्म वासनाओं ने इस प्रपंच को देखा है, वे सब जीव भी ब्रह्मवासनाओं के ब्रह्म धाम चले जाने पर आनन्द से पूर्ण उस परमपद को प्राप्त होंगे जो गौलोक से भी परात्पर है, वह सत्स्वरुप का निर्मल चैतन्य है।

Shri Prannath Ji Pustkalay

श्री विराट पट दर्शन

१

इस विराट पट (नक्शे) में श्री निजानंद प्रणामी सम्प्रदाय के सिद्धांतानुसार पातांल से लेकर परमधाम तक क्षर, अक्षर तथा अक्षरातीत तीनों स्थान का शास्त्र सिद्ध विस्तार बताया गया है।

श्री परमधाम (पच्चीस पक्ष)

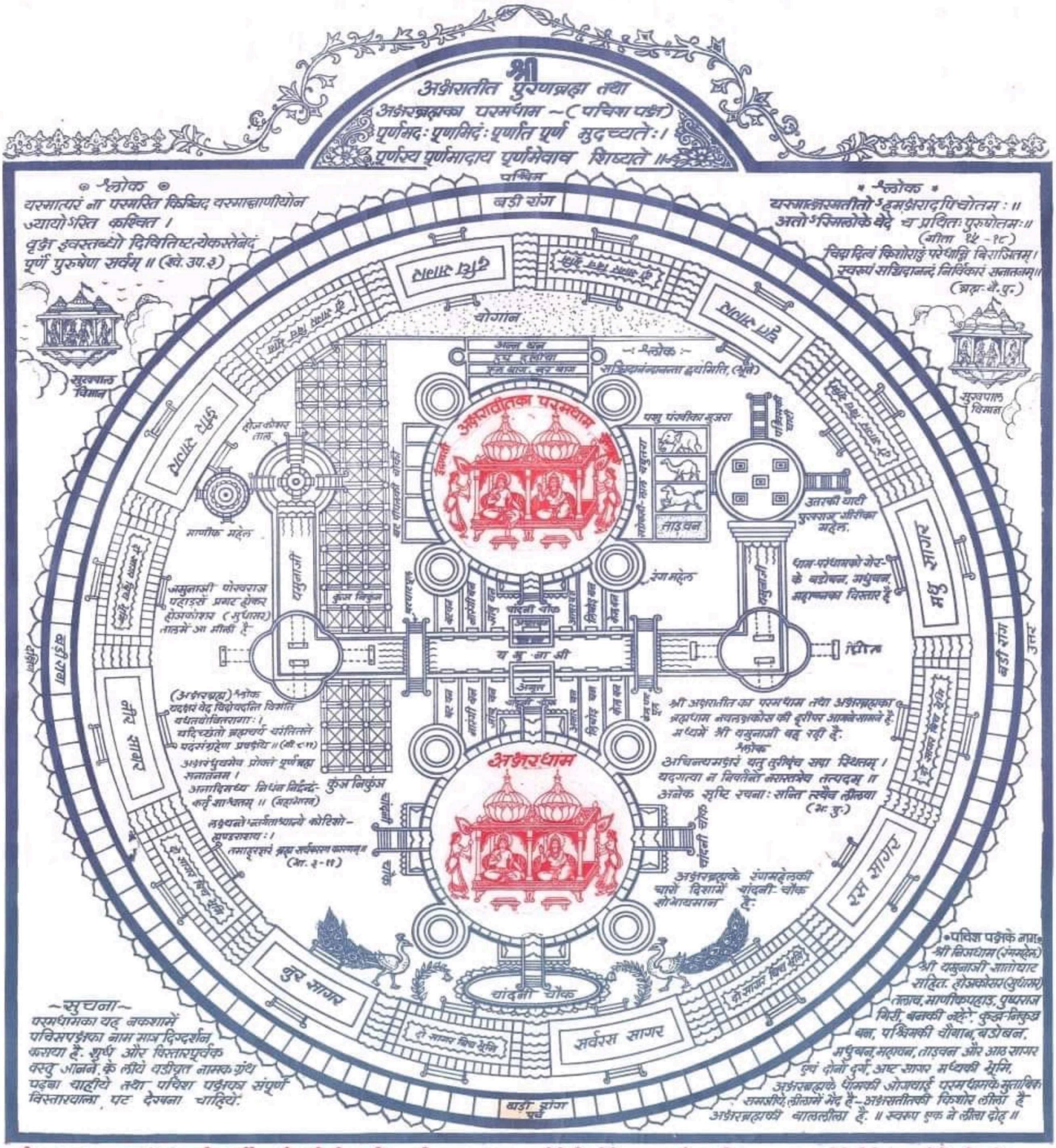

श्री परमधाम अखण्ड, अनंत, सब्दातीत, सर्वोत्तम और अद्वैत है, तदापि ब्रह्मसृष्टि स्वरुप मुमुक्ष आत्माओं के दिल में प्रेम लक्षणा भक्तिरस की भावना उत्पन्न करने के लिये महापुरुषों ने अद्वैत को कायम रख कर द्वैत में होकर वर्णन किया है।

पूर्णब्रह्म परमात्मा सर्वोत्तम मात्र एक ही तत्व है, और सर्व शक्मिान है, वह चाहे सो कर सकता है। क्षर का सारा ब्रह्माण्ड जो अनित्य व जड़ स्वरुप है, उसको सत्ता रुप चैतन्य शक्ति प्रदान करके महद, मानसी, मैथुनी तीनों प्रकार की सृष्टि को नाच नचा रहे हैं। इस तरह अपार है, बेसुमार है तथा शुद्ध साकार है, उसी को मनुष्य तन द्वारा समझने के लिये मात्र तारतम्य ज्ञान (शुद्ध ब्रह्म ज्ञान) सर्वोत्तम साधन है। इस नक्शे द्वारा बाह्य रुप से मात्र दिग्दर्शन कराया गया है। यथा, अपार अपार करी जो कहिये, तो आवे नहिं बुद्ध माहे, ताथे वर्णन करके सबे कही धनी ने आहे। (नवरंग)।

वास्ते साकार (स्थूल) रुप से वर्णन देख-सुन के किसी को भी शंका में पड़ना नहीं चाहिये।

Shri Prannath Ji Pustkalay

श्री पूर्णब्रह्म अक्षरातीत का

॥ परमधाम ॥

झरोखे सामी नजर करें, परनाम करके पीछे फिरें ।
इत और ना दूजा कोए, सरुप एक है लीला दोए ॥
परि.: ३/१८

केल लिबोई अनार, बांई तरफ खूबी देत ।
जांबू नारंगी बट दाहिने, नूर सनमुख सोभा लेत ॥
दोए पुल सात घाट बीच में, पाट घाट बिराजत ।
बीच दोऊ दरबार के, बन अंबर जोत धरत ॥
परि.: ३४/१९,२०

धाम तालाब कुंज बन जोहे, माणिक नेहेरें वन की सोहें ।
पश्चिम चौगान बड़े वन कहिए, यों पुखराज जमुना जी लहिए ।
आठों सागर आठ जिमी के, ये पच्चीस पक्ष हैं धाम धनी के ।

भगवान जी खेलत बाल चरित्र, आप अपनी इच्छा सों प्रकृत ।
कोट ब्रह्मांड नजरों में आवें, खिन में देखके पलमें उड़ावें ॥
परि.: ३/१९

नूर नीर खीर दधि सागर, घृत मधु एक ठौर ।
रस सब रस सागर, बिना मोमिन न पावे कोई और ॥

दो दरिया बीच एक जिमी, दो जिमी बीच दरिया एक ।
यों आठ दरिया बीच आठ जिमी, गिन तरफ से इन विवेक ॥
परि.: ४३/६०, ६१

एक पात बिरिख को ना गिरे, ना खिरे पंखी का पर ।
ना होए नया कछू अर्स में, जंगल या जानवर ॥
अर्स खावंद है एकला, आपै हक जात ।
बिना कुदरत कादर की, क्यों पाइए सिफात ॥
खु.: १७/९,१२

न अर्स जिमिएँ दूसरा, कोई और धरावे नाउ ।
ए लिख्या वेद कतेब में, कोई नाहीं खुदा बिन काहूं ॥
खु.: १६/८३

Shri Prannath Ji Pustkalay